

# लाओदीकिया - संख्या दो

## प्रोटेस्टेंट सींग

Jeff Pippenger

2023-08-27

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में जो संदेश खोला जा रहा है, उसे समझने के लिए प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन की जड़ें, उसका विकास और उसका महत्व पहचानना अनिवार्य है। उस सुधार के इतिहास में तीन मुख्य धाराएँ हैं: बाइबल; बाइबल का अध्ययन करने की सही पद्धति; और यह कि उस इतिहास में चुने गए दूत उसी इतिहास के मार्गचिह्न हैं। हमेशा की तरह, शैतान ने किंग जेम्स बाइबल को कई नकली प्रतिरूपों के माध्यम से छिपाने का प्रयास किया, उसने बाइबल को समझने की सही पद्धति को भी कई नकली प्रतिरूपों से ढकने की कोशिश की, और साथ ही उस इतिहास की यात्रा के दौरान उठाए गए सही दूतों (मार्गचिह्न) को भी छिपाने का प्रयास किया।

"लेकिन शैतान खाली नहीं बैठा था। अब उसने वही करने का प्रयास किया जो वह हर अन्य सुधार आंदोलन में करता आया है—सच्चे काम के स्थान पर उनके हाथ में नकली चीज़ थमा कर लोगों को धोखा देना और उन्हें नष्ट करना। जैसे मसीही कलीसिया की पहली शताब्दी में झूठे मसीह थे, वैसे ही सोलहवीं शताब्दी में झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट हुए।" द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सि, 186.

1840 से 1844 तक की मिलराइट इतिहास में, प्रोटेस्टेंटवाद—जो पृथ्वी-पशु, अर्थात् संयुक्त राज्य अमेरिका, के दो सींगों में से एक है—का दायित्व मिलराइट एडवेंचर ने संभाल लिया; वह प्रोटेस्टेंट सींग बन गया। उसी समय, जो कलीसियाएँ पहले स्वयं को प्रोटेस्टेंट कहती थीं, वे धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद बन गईं, या जैसा कि मिलराइट उन्हें पहचानते थे, "रोम की बेटियाँ।" जब 1843 में प्रोटेस्टेंटों ने पहले स्वर्गदूत का संदेश अस्वीकार कर दिया, तो उनका पतन हो गया और मिलराइटों ने प्रोटेस्टेंटवाद का दायित्व संभाले रखा। मिलराइट इतिहास परमेश्वर के कार्य का चरम था, जिसके द्वारा उसने अपनी "जंगल में कलीसिया" को परमेश्वर के वचन की पूर्ण समझ तक पहुँचाया।

अन्वेषणात्मक न्याय के उद्घाटन ने परमेश्वर की व्यवस्था, विशेषकर विश्रामदिन, की कसौटी सामने रखी। तीसरे स्वर्गदूत का संदेश घोषित करने के लिए ऐसी कलीसिया की आवश्यकता थी जो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करे, जिसे अंधकार युग में पोपतंत्र की परंपराओं और रीति-रिवाजों के नीचे दफन कर दिया गया था। मसीह ने प्रोटेस्टेंटों को 1840 से 1844 के इतिहास तक ले जाकर एलिय्याह की कसौटी प्रस्तुत की, जिसमें विलियम मिलर एलिय्याह के प्रतिरूप थे; और जब प्रोटेस्टेंटों ने मिलर के संदेश को अस्वीकार किया तो वे रोम लौट गए। मिलर द्वारा सुनाए गए पहले स्वर्गदूत के संदेश की कसौटी का प्रतिरूप करमेल पर्वत पर एलिय्याह में प्रकट हुआ।

तब एलिय्याह सब लोगों के पास आकर कहने लगा, तुम कब तक दो मतों के बीच डगमगाते रहोगे? यदि प्रभु परमेश्वर है, तो उसके पीछे चलो; परन्तु यदि बाल है, तो उसके पीछे चलो। और लोगों ने उसे एक भी उत्तर न दिया। 1 राजा 18:21.

1840 में, जब प्रोटेस्टेंटों के सामने एलिय्याह का संदेश आया, जिसका प्रतिनिधित्व मिलर और प्रथम स्वर्गदूत करते थे, तब उन्होंने बाअल को चुना!

प्रोटेस्टेंट सुधार बाइबल के सत्यों की मुहर खोलने की प्रक्रिया थी, जिसकी शुरुआत "भोर के तारे" से हुई, जिसे थुआतीरा की कलीसिया द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए इतिहास के दौरान दिए जाने का वादा किया गया था। बाइबल के विरुद्ध सीधा आक्रमण कई शताब्दियों पहले ही शुरू हो गया था, और उसका स्पष्ट वर्णन The Great Controversy में, विशेषकर वाल्देन्सियों के इतिहास के साथ, प्रस्तुत किया गया है। 1930 में, बेंजामिन विल्करसन ने Our Authorized Bible Vindicated नामक पुस्तक प्रकाशित की। यह पुस्तक उन पवित्र मूल ग्रंथों के विरुद्ध छेड़े गए युद्ध का दस्तावेज़ीकरण करती है, जिनका उपयोग अंततः किंग जेम्स बाइबल के अनुवाद में किया

गया, और साथ ही उन विविध सैतानी नकली पाठों का भी, जिन्हें कैथोलिकों, धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद और लाओदीकियाई एडवेंटिस्टों द्वारा तब भी और आज भी बढ़ावा दिया जाता है। यह युद्ध वाल्डेन्सियों के इतिहास से बहुत पहले ही शुरू हो चुका था, पर वे उन लोगों के मार्गचिह्न और प्रतीक हैं जिन्होंने उन सही पांडुलिपियों के महत्व की गवाही देने के लिए अपने प्राण न्योछावर कर दिए, जिनका अनुवाद अंततः 1611 की किंग जेम्स बाइबल में किया गया।

1611 में किंग जेम्स बाइबल का निर्माण एक बहुत ही विशिष्ट अनुवाद प्रक्रिया से होकर गुजरा। बाइबल के अनुवाद और प्रकाशन की प्रक्रिया उत्पादन के सात चरणों के माध्यम से पूरी की गई। इसे पूरा होने में सात वर्ष भी लगे, और सात बाइबिलीय वर्ष पच्चीस सौ बीस दिन होते हैं। यह, स्वाभाविक ही, उतने ही भविष्यवाणी के दिनों की संख्या है जिनमें यीशु ने दानियेल नौ की पूर्ति में बहुतों के साथ वाचा की पुष्टि की। उस पवित्र सप्ताह के मध्य में मसीह को क्रूस पर चढ़ाया गया, और स्वाभाविक ही, क्रूसित मसीह बाइबल का केंद्र है। परमेश्वर के शुद्ध वचन को तैयार करने के वे सात चरण इस प्रकार थे।

- पहला: व्यक्तियों द्वारा प्रारंभिक अनुवाद: लगभग 50 अनुवादकों को छह समितियों में बाँटा गया, प्रत्येक समिति बाइबिल के विभिन्न खंडों के लिए ज़िम्मेदार थी। इन व्यक्तियों ने मूल भाषाओं (हिब्रू, अरामी और ग्रीक) से अंग्रेज़ी में अनुवाद करने पर काम किया।
- दूसरा: समिति समीक्षा: प्रत्येक समिति द्वारा किसी अनुभाग का अनुवाद पूरा करने के बाद, उस कार्य की समीक्षा स्वयं समिति के सदस्यों ने की। इससे सामूहिक सुझाव मिल सके और त्रुटियों का सुधार हो सका।
- तीसरा: सामान्य समिति की समीक्षा: व्यक्तिगत समितियों के अनुवादों को बाद में विद्वानों के एक बड़े समूह, जिसे सामान्य समिति कहा गया, को प्रस्तुत किया गया। यह समिति छह अनुवाद समितियों में से प्रत्येक के प्रतिनिधियों से बनी थी। उन्होंने पूरे कार्य की समीक्षा की, विभिन्न समितियों के अनुवादों की तुलना की और उनमें सामंजस्य स्थापित किया।
- चौथा: अतिरिक्त समीक्षा और संशोधन: सामान्य समिति द्वारा संशोधित संस्करण को आगे की समीक्षा और परिष्करण के लिए प्रत्येक समिति को वापस भेजा गया। इस आवर्ती प्रक्रिया ने यह सुनिश्चित करने में सहायता की कि अनुवाद सुसंगत और सटीक था।
- पाँचवाँ: अंतिम समीक्षा और अनुमोदन: जब व्यक्तिगत समितियों ने अपने संशोधन पूरे कर लिए, तो अंतिम मसौदा अंतिम समीक्षा और अनुमोदन के लिए सामान्य समिति को प्रस्तुत किया गया।
- छठा: राजकीय स्वीकृति और प्रकाशन: स्वीकृत अनुवाद को तब राजा जेम्स प्रथम के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत किया गया।
- सातवाँ: जैसे ही उन्होंने अपनी राजकीय स्वीकृति दी, उस अनुवाद को 1611 में बाइबिल के किंग जेम्स संस्करण (अधिकृत संस्करण) के रूप में प्रकाशित किया गया।

प्रभु के वचन शुद्ध वचन हैं; जैसे मिट्टी की भट्टी में तपी हुई, सात बार परिशोधित चाँदी के समान। हे प्रभु, तू उन्हें सुरक्षित रखेगा; तू उन्हें इस पीढ़ी से सदैव बचाए रखेगा। भजन संहिता 12:6, 7.

परमेश्वर के वचन के विरुद्ध, और उस क्रमशः प्रकट होता इतिहास के विभिन्न संदेशवाहकों द्वारा दर्शाए गए मार्गचिह्नों तथा उसके वचन को ठीक रीति से विभाजित करने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली सही पद्धति के विरुद्ध, शैतान के युद्ध में, 1611 की किंग जेम्स बाइबल एक ऐसा मार्गचिह्न है जिसे भजन संहिता बारह में विशेष रूप से पहचाना गया है। भ्रष्ट कैथोलिक पांडुलिपियों के माध्यम से तैयार की गई विभिन्न जाली बाइबलों में से कोई भी भजन संहिता बारह की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। सात चरणों में सम्पन्न शुद्धिकरण की प्रक्रिया और पच्चीस सौ बीस दिनों की अवधि यह पहचान कराती है कि किंग जेम्स बाइबल परमेश्वर के "शुद्ध वचन" है। परमेश्वर यह प्रतिज्ञा करता है कि किंग जेम्स बाइबल को वह सदा के लिए अपने शुद्ध वचन के रूप में सुरक्षित रखेगा, और इसलिए वह "इतिहासवाद" की उस पद्धति को भी बनाए रखने की प्रतिज्ञा करता है जिसका उपयोग प्रोटेस्टेंट सुधारकों, जिनमें विलियम मिलर

शामिल हैं, ने किया था।

चौदहवीं शताब्दी में जॉन वाइक्लिफ़, जिन्हें पुस्तक *The Great Controversy* में "सुधार आंदोलन का भोर का तारा" के रूप में पहचाना जाता है, को परमेश्वर ने बाइबल का अनुवाद ऐसी भाषा में करने के लिए उपयोग किया जिसे साधारण व्यक्ति भी समझ सके। वे प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन की शुरुआत का मार्गचिह्न स्थापित करने वाले संदेशवाहक हैं।

वह महान आंदोलन जिसे वाइक्लिफ़ ने आरम्भ किया—जो अंतरात्मा और बुद्धि को मुक्त करने तथा रोम के विजय-रथ से लंबे समय से बँधे राष्ट्रों को आज़ाद करने वाला था—उसका उद्गम बाइबल में था। यही वह स्रोत था उस आशीष की धारा का, जो जीवन-जल की भाँति चौदहवीं सदी से युगों-युगों तक बहती चली आ रही है। वाइक्लिफ़ ने पवित्र शास्त्रों को परमेश्वर की इच्छा के ईश्वर-प्रेरित प्रकाशन के रूप में, विश्वास और आचरण के लिए पर्याप्त नियम मानते हुए, पूर्ण विश्वास के साथ स्वीकार किया। उन्हें इस प्रकार शिक्षित किया गया था कि वे रोम की कलीसिया को दैवी और अचूक अधिकार मानें, और हज़ार वर्षों से स्थापित शिक्षाओं और रीति-रिवाजों को बिना कोई प्रश्न किए श्रद्धापूर्वक स्वीकार करें; परन्तु उन्होंने इन सब से मुड़कर परमेश्वर के पवित्र वचन को सुनना चुना। इसी अधिकार को स्वीकार करने का उन्होंने लोगों से आग्रह किया। पोप के माध्यम से बोलती कलीसिया के स्थान पर, उन्होंने यह घोषित किया कि एकमात्र सच्चा अधिकार परमेश्वर की वह वाणी है जो उनके वचन के द्वारा बोलती है। और उन्होंने केवल यह ही नहीं सिखाया कि बाइबल परमेश्वर की इच्छा का पूर्ण प्रकाशन है, बल्कि यह भी कि उसका एकमात्र व्याख्याकार पवित्र आत्मा है, और प्रत्येक व्यक्ति उसके उपदेशों का अध्ययन करके अपने कर्तव्य को स्वयं जाने। इस प्रकार उन्होंने लोगों का मन पोप और रोम की कलीसिया से हटाकर परमेश्वर के वचन की ओर मोड़ दिया।

वाइक्लिफ़ धर्म-सुधारकों में सबसे महान व्यक्तियों में से एक थे। बुद्धि की व्यापकता, विचारों की स्पष्टता, सत्य को दृढ़ता से बनाए रखने और उसकी रक्षा करने के साहस में, उसके बाद आने वालों में बहुत कम ही लोग उसकी बराबरी कर पाए। जीवन की पवित्रता, अध्ययन और कार्य में अथक लगन, अडिग सत्यनिष्ठा, और अपनी सेवा में मसीह-सदृश प्रेम और निष्ठा—ये ही गुण उस प्रथम धर्म-सुधारक की पहचान थे। और यह सब उस युग के बौद्धिक अंधकार और नैतिक पतन के बावजूद था, जिससे वह उभरा था।

वाइक्लिफ़ का चरित्र पवित्र शास्त्रों की शिक्षा देने वाली और रूपांतरित करने वाली शक्ति का प्रमाण है। जो वह था, उसे वैसा बनाने वाली बाइबल ही थी। ईश्वरीय प्रकाशन की महान सच्चाइयों को ग्रहण करने का प्रयास मनुष्य की सभी क्षमताओं में ताज़गी और स्फूर्ति भर देता है। यह मन को विस्तृत करता है, धारणा-शक्ति को तीक्ष्ण बनाता है, और विवेक को परिपक्व करता है। बाइबल का अध्ययन हर विचार, भावना और आकांक्षा को उस प्रकार उदात्त बनाता है जैसा कोई अन्य अध्ययन नहीं कर सकता। यह उद्देश्य में स्थिरता, धैर्य, साहस और सहनशक्ति देता है; यह चरित्र को परिष्कृत करता है और आत्मा को पवित्र करता है। शास्त्रों का गंभीर और श्रद्धापूर्ण अध्ययन, जो विद्यार्थी के मन को अनंत मन से प्रत्यक्ष संपर्क में लाता है, संसार को ऐसे मनुष्य प्रदान करेगा जिनकी बुद्धि अधिक प्रबल और अधिक सक्रिय होगी, और जिनके सिद्धांत अधिक उदात्त होंगे; और यह परिणाम मानवीय दर्शन द्वारा उपलब्ध सबसे सक्षम प्रशिक्षण से कभी प्राप्त हुए परिणामों से भी बढ़कर होगा। 'तेरे वचनों का प्रवेश,' भजनकार कहता है, 'प्रकाश देता है; वह समझ देता है।' भजन संहिता 119:130। महान संघर्ष, 93, 94।

द ग्रेट कॉन्ट्रोवर्सी में जॉन विक्लिफ़ के संबंध में दिए गए वर्णन के बाद, सिस्टर व्हाइट निष्ठावान सुधारकों (मार्गचिह्नों) की एक सूची प्रस्तुत करती हैं, जो अंततः सुधारक जॉन नॉक्स तक पहुँचती है। वह स्कॉटलैंड की रानी मैरी द्वारा जॉन नॉक्स से पूछे गए एक महत्वपूर्ण प्रश्न पर प्रकाश डालती हैं।

जॉन नॉक्स ने कलीसिया की परंपराओं और रहस्यवाद से मुंह मोड़ लिया था, ताकि वह परमेश्वर के वचन की सच्चाइयों से पोषण पा सके; और विशार्ट की शिक्षा ने रोम की कलीसिया की संगति को त्याग देने और उत्पीड़ित सुधारकों के साथ जुड़ जाने के उसके निश्चय की पुष्टि कर दी थी. . . .

"जब स्कॉटलैंड की रानी के आमने-सामने लाया गया—जिनकी उपस्थिति में अनेक प्रोटेस्टेंट नेताओं का उत्साह मंद पड़ जाता था—तब जॉन नॉक्स ने सत्य के लिए अडिग गवाही दी। न वह मनुहार से जीता जा सकता था; न वह धमकियों से घबराया। रानी ने उस पर विधर्म का आरोप लगाया। उसका कहना था कि उसने लोगों को राज्य द्वारा निषिद्ध धर्म स्वीकार करना सिखाया था, और इस प्रकार उसने ईश्वर की उस आज्ञा का उल्लंघन किया था जो प्रजा को अपने शासकों की आज्ञापालन करने का आदेश देती है। नॉक्स ने दृढ़ता से उत्तर दिया:- 'जैसे सच्चा धर्म न तो अपना उद्गम और न ही अपना अधिकार शासकों से प्राप्त करता है, बल्कि केवल अनन्त ईश्वर से, वैसे ही प्रजा अपने शासकों की रुचि के अनुसार अपना धर्म गढ़ने के लिए बाध्य नहीं है। क्योंकि अक्सर यह होता है कि सबमें से शासक ही ईश्वर के सच्चे धर्म से सबसे अधिक अनभिज्ञ होते हैं। यदि अब्राहम की सारी संतान फिरौन के धर्म की होती—जिसकी वे लंबे समय तक प्रजा रहे—तो, मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदया, संसार में कौन सा धर्म होता? और यदि प्रेरितों के दिनों में सब लोग रोमी सम्राटों के धर्म के होते, तो, मैं आपसे विनती करता हूँ, महोदया, आज पृथ्वी पर कौन सा धर्म होता? ... और इस प्रकार, महोदया, आप समझ सकती हैं कि प्रजा अपने शासकों के धर्म से बँधी नहीं है, यद्यपि उन्हें आदर देने की आज्ञा दी गई है।'"

"मैरी ने कहा, 'तुम पवित्र शास्त्र की व्याख्या एक तरह से करते हो, और वे [रोमी शिक्षक] उसकी व्याख्या दूसरी तरह से करते हैं; मैं किस पर विश्वास करूँ, और न्यायाधीश कौन होगा?'"

"'तुम परमेश्वर पर विश्वास करोगे, जो अपने वचन में स्पष्ट रूप से बोलता है,' सुधारक ने उत्तर दिया; 'और जहाँ तक वचन तुम्हें सिखाता है, उससे आगे न तो इस पर और न उस पर विश्वास करोगे। परमेश्वर का वचन अपने आप में स्पष्ट है, और यदि किसी स्थान पर कुछ अस्पष्टता हो, तो पवित्र आत्मा, जो कभी अपने आप के विरुद्ध नहीं होता, अन्य स्थानों में उसी बात को और अधिक स्पष्ट करता है, ताकि कोई संदेह शेष न रहे, सिवाय उनके जो हठपूर्वक अज्ञानी हैं।' ऐसे ही सत्य थे जिन्हें निडर सुधारक ने अपने प्राणों की बाज़ी लगाकर राजा के कान में कहा। उसी अविचल साहस के साथ वह अपने उद्देश्य पर दृढ़ रहा, प्रार्थना करता और प्रभु की लड़ाइयाँ लड़ता रहा, जब तक स्कॉटलैंड पोप-मत से मुक्त न हो गया।" महान संघर्ष, 250, 251.

सुधारक और रानी के बीच का संवाद सुधार आंदोलन के इतिहास की तीसरी धारा को उजागर करता है, जो शैतान के उस प्रयास की पहचान करता है कि वह बाइबल, सुधारकों और बाइबलीय अध्ययन की पद्धति के नकली प्रतिरूप गढ़े। रानी को जॉन का उत्तर यह था कि सही पद्धति "इतिहासवाद" है, जिसका आधार यह है कि भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास की एक रेखा को पवित्र आत्मा भविष्यवाणी-संबंधी इतिहास की दूसरी रेखा के माध्यम से समझाता है।

अंधकार में प्रकाश प्रकट हो चुका था। वाइक्लिफ और प्रारंभिक सुधारकों ने, और आगे चलकर पूरे मिलराइट इतिहास के दौरान, 'हिस्टोरिसिज़्म' कहलाने वाली बाइबल अध्ययन की एक पद्धति अपनाई। बाइबल अध्ययन की उस पद्धति का इतिहास अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है, लेकिन मिलर और उसके बाद फ्यूचर फॉर अमेरिका द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी की व्याख्या के नियमों का महत्व वास्तव में समझने के लिए उस इतिहास को पहचानना आवश्यक है।

परमेश्वर की नामित प्रजा के रूप में बहन व्हाइट केवल दो कलीसियाओं की पहचान करती हैं। वे हैं प्राचीन इस्राएल और सप्तम-दिवसीय ऐडवेंटिस्ट कलीसिया।

"हम परमेश्वर की प्रजा क्यों कहलाते हैं, इसके कारण बार-बार दोहराए जाने चाहिए। व्यवस्थाविवरण 4:1-13"  
Manuscript Releases, खंड 8, 426।

प्रेरितों की कलीसिया और पापाई अंधकार के दौरान मरुस्थल में रही कलीसिया को कभी परमेश्वर के नामित लोग नहीं कहा गया, क्योंकि यह शब्द (अर्थात् नामित होना) उस कलीसिया को दर्शाता है जिसे परमेश्वर की व्यवस्था का अमानतदार बनने की जिम्मेदारी दी गई थी, और ऐडवेंटवाद के साथ उन्हें परमेश्वर की भविष्यवाणी संबंधी सच्चाइयों के भी अमानतदार होना था।

जैसे उसने प्राचीन इस्राएल को बुलाया था, वैसे ही परमेश्वर ने आज के समय में अपनी कलीसिया को पृथ्वी पर ज्योति बनकर खड़े होने के लिए बुलाया है। सत्य की शक्तिशाली छेनी—अर्थात् प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्वर्गदूत के संदेशों—के द्वारा, उसने उन्हें कलीसियाओं और संसार से अलग किया है ताकि उन्हें अपने साथ पवित्र निकटता में ला सके। उसने उन्हें अपनी व्यवस्था के संरक्षक बनाया है और इस समय के लिए भविष्यवाणी के महान सत्यों को उन्हें सौंपा है। जैसे पवित्र वचन प्राचीन इस्राएल को सौंपे गए थे, वैसे ही ये संसार तक पहुँचाए जाने वाला पवित्र न्यास हैं। प्रकाशितवाक्य 14 के तीन स्वर्गदूत उन लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो परमेश्वर के संदेशों के प्रकाश को स्वीकार करते हैं और उसके प्रतिनिधि बनकर पृथ्वी की लंबाई और चौड़ाई में चैतावनी सुनाने के लिए आगे बढ़ते हैं। गवाहियाँ, खंड 5, 455.

विलियम मिलर परमेश्वर की भविष्यवाणी संबंधी सच्चाइयों को उद्धाटित करने के लिए चुने हुए संदेशवाहक थे, और जब वे सच्चाइयाँ 1844 में एक प्रजा को अति-पवित्र स्थान के खुले द्वार तक ले आईं, तब परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था को भी उद्धाटित किया। वाइक्लिफ बाइबल को खोलने और प्रोटेस्टेंट सुधार आंदोलन की शुरुआत उत्पन्न करने में एक मार्गचिन्ह है, पर वह 'भविष्यवाणी की महान सच्चाइयों' की स्थापना में परमेश्वर के कार्य का भी एक मार्गचिन्ह है। जॉन वाइक्लिफ पोपतंत्र के बारह सौ साठ वर्षों के शासन के इतिहास में पहचाना गया प्रातः तारा था। उनका कार्य चौदहवीं शताब्दी में आरम्भ हुआ; फिर सत्रहवीं शताब्दी में उस भविष्यवाणी की रेखा का एक और मार्गचिन्ह 1611 में किंग जेम्स बाइबल का प्रकाशन था। उसी रेखा पर अंततः हम मिलर के भविष्यवाणी-व्याख्या के नियमों के मार्गचिन्ह तक पहुँचते हैं। सत्य की उस रेखा में मिलर स्वयं एक मार्गचिन्ह हैं, और उनके नियम भी। उनके नियम एडवेंटवाद के अंत में 'Prophetic Keys' के प्रकाशन द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए एक मार्गचिन्ह की गवाही देते हैं।

यदि हम यह नहीं समझते कि मिलर के नियम भविष्यवाणी-इतिहास की उस रेखा में एक मील का पत्थर थे, जो बाइबल के मूल और सही पाठों को सुरक्षित रखने के कार्य तथा बाइबल की सच्ची समझ के उद्धाटन के कार्य का प्रतिनिधित्व करती थी—और जिसके लिए यह आवश्यक था कि सुधारकों का मार्गदर्शन इस प्रकार किया जाए कि वे 'historicism' कहलाने वाली पवित्र अध्ययन-पद्धति को समझें और अपनाएँ—तो हमारे पास एडवेंटवाद के अंत में तीसरे स्वर्गदूत के प्रकाश को प्रस्तुत करने और संरक्षित रखने के कार्य से संबंधित भविष्यवाणी-सत्यताओं को पहचानने के लिए आवश्यक जानकारी का अभाव रहेगा। इसी कारण, उस इतिहास-रेखा का एक संक्षिप्त अवलोकन करना महत्वपूर्ण है।

'प्रोटेस्टेंट' शब्द की एकमात्र वास्तविक परिभाषा रोम का विरोध करना है। यदि कोई कलीसिया रोम का विरोध करना बंद कर दे, तो वह अब प्रोटेस्टेंट नहीं रहती और तब वह रोम की पुत्री बन जाती है, जैसा कि पहले स्वर्गदूत का संदेश अस्वीकार करने वाले प्रोटेस्टेंटों के साथ हुआ। कैथोलिक कलीसिया से बाहर निकले प्रोटेस्टेंटों की जो प्रमुख समझ उनका 'सूत्रवाक्य' बनी, वह थी 'बाइबल और केवल बाइबल।' फिर भी इतिहास इस तथ्य की गवाही देता है कि बाइबल को उचित रीति से विभाजित किया जाना आवश्यक था।

परमेश्वर के सम्मुख अपने को स्वीकृत ठहराने के लिए प्रयत्न कर; ऐसा काम करने वाला बन जिसे लज्जित होना न पड़े, जो सत्य के वचन को ठीक रीति से समझाता हो। परन्तु अपवित्र और व्यर्थ की बातों से बच, क्योंकि वे और भी अधिक अधर्म में बढ़ाएँगी। 2 तीमुथियुस 2:15, 16.

सत्य के वचन को ठीक रीति से विभाजित करने के अपने प्रयासों में जिस बाइबिल अध्ययन पद्धति का उपयोग करने के लिए प्रोटेस्टेंटों को मार्गदर्शित किया गया, वह "ऐतिहासिकतावाद" है। वह पद्धति शैतान के हमले का एक विशेष और गंभीर निशाना बनी, और उस पर उसने सचमुच हमला किया।

हमें स्वयं जानना चाहिए कि मसीही धर्म क्या है, सत्य क्या है, वह विश्वास क्या है जो हमने प्राप्त किया है, और बाइबल के वे नियम कौन से हैं—वे नियम जो हमें सर्वोच्च अधिकार से दिए गए हैं। The 1888 Materials, 403.

सुधारकों द्वारा—विलियम मिलर सहित—प्रयुक्त बाइबिलीय पद्धति को कमजोर किए जाने की शुरुआत को विशेष रूप से पंद्रहवीं शताब्दी में जेसुइट विद्वान फ्रांसिस्को रिबेरा (1537-1591) से जोड़ा जाता है, जिन्हें भविष्यवादी व्याख्या को लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने प्रकाशितवाक्य की पुस्तक पर एक टीका लिखी, जिसमें उन्होंने भविष्यवाणियों की एक भविष्यवादी व्याख्या प्रस्तुत की, जिससे उन भविष्यवाणियों को उनके ऐतिहासिक संदर्भ से दूर कर दिया गया। रिबेरा ने यह पद्धति इस उद्देश्य से गढ़ी कि उस सत्य का प्रतिरोध किया जा सके, जिसे ऐतिहासिकतावाद की पद्धति हमेशा उजागर करती थी। वह सत्य यह था कि रोम का पोप बाइबल की भविष्यवाणी का मसीह-विरोधी है।

सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में यह प्रमाणित किया जा सकता है कि प्रोटेस्टेंटवाद जानता था कि रिबेरा की झूठी पद्धति शैतानी और त्रुटिपूर्ण थी। उस काल के प्रोटेस्टेंटों ने उस जेसुइट विद्वान की 'अपवित्र और व्यर्थ की बकवास' का विरोध करते हुए किताबें और पुस्तिकाएँ लिखीं। लेकिन 1909 में 'ट्रोजन हॉर्स' स्कोफील्ड रेफरेंस बाइबल प्रकाशित हुई, और बाइबल की पाद-टिप्पणियों में जो संदर्भ जोड़े गए, वे रिबेरा और मैनुअल लकुंज़ा (1731-1801) नामक एक अन्य जेसुइट की शिक्षाओं पर आधारित थे। लकुंज़ा ने 'Juan Josafat Ben-Ezra' नाम से लिखा और *The Coming of the Messiah in Glory and Majesty* शीर्षक से एक पुस्तक प्रकाशित की। अपने से पहले रिबेरा की तरह, यह पुस्तक प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में दी गई भविष्यवाणियों की पूर्ति पर सीधा आक्रमण थी।

शैतान जानता था कि जिस संदेश को उसे भ्रम से ढँक देना है, वह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से आने वाला अंतिम चेतावनी का संदेश था। दो जेसुइट पादरियों की अपवित्र और व्यर्थ की बकवास को स्कोफील्ड रेफरेंस बाइबल के संदर्भों में सम्मिलित कर देने से शैतान को धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटों को जेसुइट पद्धतियाँ स्वीकार करवाने का अवसर मिल गया, और इस प्रकार उन्हें सत्य से अंधा कर दिया। शैतान ने यह कार्य कई कैथोलिक भविष्यवाणी मॉडल प्रस्तुत करके पूरा किया, जिन्होंने बाइबल की भविष्यवाणी में मसीह-विरोधी कौन है, इसकी स्पष्ट पहचान की संभावना को हटा दिया। यह धोखा शैतान के लिए कठिन नहीं था, क्योंकि 1843 में मिलर के संदेश को अस्वीकार कर प्रोटेस्टेंट पहले ही रोमन कलीसिया की ओर लौट चुके थे।

वर्षों के दौरान कई पुस्तकें और लेख प्रकाशित हुए हैं, जो बाइबल पर शैतान के उस हमले का विवरण देते हैं, जो यीशु मसीह को क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद की प्रारंभिक कुछ शताब्दियों में शुरू हुआ था। वह हमला इस हद तक पहुँच गया कि जाली बाइबलें बनाने के लिए जाली पांडुलिपियाँ प्रवेश कराई गईं। शैतान ने उन सुधारकों पर भी हमला किया, जो परमेश्वर के वचन को कायम रखने के लिए उठाए गए थे, उनके जीते-जी भी और उनके मर जाने के बाद भी।

जरा सोचिए कि आधुनिक सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट इतिहासकार और धर्मशास्त्री विलियम मिलर के विषय को लेकर कैसा रुख अपनाते हैं। मानो उन्होंने उनकी हड्डियाँ कब्र से निकालकर मिसिसिपी नदी में फेंक दी हों।

विलियम मिलर शैतान के राज्य को विचलित कर रहे थे, और परम-शत्रु ने केवल संदेश के प्रभाव को निष्प्रभावी करने की ही नहीं, बल्कि स्वयं संदेशवाहक को नष्ट कर देने की भी चेष्टा की। जब फादर मिलर ने शास्त्र के सत्य को अपने श्रोताओं के हृदयों पर व्यावहारिक रूप से लागू किया, तो नामधारी ईसाइयों का क्रोध उनके विरुद्ध भड़क उठा, जैसे कि यहूदियों का क्रोध मसीह और उनके प्रेरितों के विरुद्ध भड़काया गया था। कलीसिया के सदस्यों ने अधम वर्गों को उकसाया, और कई अवसरों पर शत्रुओं ने यह षड्यंत्र रचा कि वह सभा-स्थान से निकलते ही उसकी जान ले लें। परन्तु पवित्र स्वर्गदूत भी उस भीड़ में थे, और उनमें से एक ने मनुष्य का रूप लेकर प्रभु के इस दास की बाँह थाम ली और उसे क्रोधित भीड़ से सुरक्षित बाहर ले गया। उसका कार्य अभी पूरा नहीं हुआ था, और शैतान तथा उसके दूत अपने उद्देश्य में विफल होकर निराश हुए। स्पिरिट ऑफ प्रोफेसी, खंड 4, 219.

देखिए कि एडवेंटवाद के वही दो वर्ग (धर्मशास्त्री और इतिहासकार) ने मिलर के नियमों की वैधता को कैसे कमतर आँका और उसे छिपाया है, जबकि सिस्टर व्हाइट हमें बताती हैं कि तीन स्वर्गदूतों के संदेशों का वास्तव में प्रचार करने वाले सभी लोग इन नियमों का उपयोग करेंगे।

जो लोग तीसरे स्वर्गदूत के संदेश का प्रचार करने में लगे हैं, वे उसी विधि के अनुसार पवित्र शास्त्रों का अध्ययन कर रहे हैं, जिसे फ़ादर मिलर ने अपनाया था। 'Views of the Prophecies and Prophetic Chronology' शीर्षक वाली एक छोटी पुस्तक में, फ़ादर मिलर बाइबल के अध्ययन और व्याख्या के लिए निम्नलिखित सरल, परंतु बुद्धिमत्तापूर्ण और महत्वपूर्ण नियम प्रस्तुत करते हैं:-

[नियम एक से पाँच तक उद्धृत किए गए हैं।]

उपरोक्त इन नियमों का एक भाग है; और बाइबल का अध्ययन करते समय हम सबके लिए यह हितकर होगा कि हम उल्लिखित सिद्धांतों पर ध्यान दें। Review and Herald, November 25, 1884.

परमेश्वर के वचन के विकास और स्थापना से संबद्ध भविष्यवाणी-इतिहास की रेखा के तीन सूत्रों की समीक्षा किए बिना, विलियम मिलर को उस दूत के रूप में स्थापित करने वाली एक प्रमुख गवाही का महत्व देख पाना असंभव है—जो अपने संदेश की प्रस्तुति में एलिय्याह का प्रतिरूप ठहरता है, धर्मियों के पुनरुत्थान में मिलर के उठाए जाने के वादे में मूसा के समान है, और एलिय्याह के संदेश की सेवा के लिए अपना खेत छोड़ देने की उसकी तत्परता में एलीशा के समान। बहन व्हाइट इन तीनों बाइबिल नायकों को विलियम मिलर का प्रतिरूप मानती हैं, जबकि आधुनिक एडवेंटिस्ट धर्मवेत्ताओं और इतिहासकारों द्वारा आज उनके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है मानो वह अठारहवीं शताब्दी का मात्र एक 'गरीब खेतिहर लड़का' था।

William Tyndale इस भविष्यवाणीपरक इतिहास की धारा में उभरे अनेक सुधारकों में से एक थे। अगर मैं यूँ कहूँ, तो जिन पोप के दूतों से उनका सामना हुआ, उनके विरुद्ध उनका 'उद्देश्य वक्तव्य' यह था: "मैं उस लड़के को, जो हल चलाता है, तुमसे अधिक पवित्र शास्त्रों का ज्ञान रखने वाला बना दूँगा।" William Miller वही खेतिहर लड़का था, जो हल चलाता था और जिसने William Tyndale की भविष्यवाणी को पूरा किया।

अब तक हमने जो प्रस्तुत किया है, उसके समर्थन में उद्धृत की जा सकने वाली समस्त ऐतिहासिक सामग्री के संदर्भ में इस भूमिका को काफी सरल कर दिया गया है। अब हम अल्फा और ओमेगा के कुछ चिह्नों पर विचार करेंगे ताकि चर्चा फिर से मिलर को एक मार्गचिह्न और दूत के रूप में देखने की ओर लौट सके।

दानियेल की पुस्तक उस पुस्तक की शुरुआत है जो दो पुस्तकों से मिलकर बनी है। उस पुस्तक का अंत प्रकाशितवाक्य की पुस्तक से होता है। यद्यपि वे दो अलग-अलग पुस्तकें हैं, परंतु साथ मिलकर वे एक ही पुस्तक का प्रतिनिधित्व करती हैं।

कई वर्ष पहले, मेरा सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट चर्च के जनरल कॉन्फ्रेंस के बाइबिल अनुसंधान संस्थान में कार्यरत एक सुप्रसिद्ध सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट धर्मशास्त्री के साथ एक सार्वजनिक संवाद हुआ था। वह धर्मशास्त्री दानियेल के अध्याय ग्यारह के अंतिम छह पदों के बारे में मेरी समझ, और साथ ही दानियेल की पुस्तक में "दैनिक" के विषय में मेरी समझ, को सुधारने का प्रयास कर रहे थे। हमारा यह संवाद कुछ समय तक चला, क्योंकि इसमें उन्होंने एक लेख लिखा, जिसका मैंने उत्तर दिया; फिर उन्होंने उसका प्रत्युत्तर दिया, और फिर स्वाभाविक रूप से मैंने अपनी बात फिर रखी, और यह क्रम इसी प्रकार चलता रहा। उस संवाद के दौरान उन्होंने मुझे बताया कि जनरल कॉन्फ्रेंस में जिस समिति में वे काम करते थे, वहाँ उन्हें दानियेल की पुस्तक का विशेषज्ञ माना जाता था, और उनके एक सहकर्मी को प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का स्थायी विशेषज्ञ माना जाता था। हमारी बातचीत में वे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बिंदुओं को संबोधित नहीं करना चाहते थे, बल्कि उन्हें अपने सहकर्मी के पास भेजना चाहते थे। वे चर्चा को केवल दानियेल की पुस्तक तक ही सीमित रखना चाहते थे।

सिस्टर वाइट स्पष्ट करती हैं कि दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य एक ही पुस्तक हैं। उस स्तर पर वे बाइबल का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो दो पुस्तकों—पुरानी और नई—से मिलकर बनी एक पुस्तक है। सिस्टर वाइट यह भी टिप्पणी करती हैं कि यहूदी कलीसिया केवल पुरानी पुस्तक को ही एकमात्र पुस्तक मानती है, और वे उन लोगों पर भी टिप्पणी करती हैं जो पुरानी पुस्तक की उपेक्षा करते हैं, क्योंकि वे केवल नई पुस्तक को ही समझते हैं या केवल नई को समझने के लिए तैयार होते हैं। उनकी ईश्वरीय प्रेरणा से दी गई गवाही यह है कि यदि आप केवल नई को स्वीकार करते हैं, तो आप पुरानी को अस्वीकार करते हैं, और इसके विपरीत। किसी धर्मशास्त्री का यह दावा करना कि वह दानिय्येल का विशेषज्ञ है, परंतु प्रकाशितवाक्य का नहीं, केवल पुराने नियम को स्वीकार करने की यहूदी धारणा को दोहराना है, और हम जानते हैं कि उस संकीर्ण दृष्टि ने यहूदियों को कहाँ पहुँचा दिया। इस विषय में किसी एक पक्ष को लेना—पुरानी को स्वीकार कर नई को न मानना, या नई को स्वीकार कर पुरानी को न मानना—पूरी गवाही को अस्वीकार करना है।

उद्धारकर्ता ने अपने चेलों से पूछा कि क्या वे इन बातों को समझते हैं। उन्होंने उत्तर दिया, 'हाँ, प्रभु।' तब उसने उनसे कहा, 'अतः स्वर्ग के राज्य के लिए शिक्षा पाया हर शास्त्री उस गृहस्वामी के समान है, जो अपने भंडार से नई और पुरानी वस्तुएँ निकालता है।' इस दृष्टान्त में, यीशु ने अपने चेलों के सामने उन लोगों की जिम्मेदारी रखी जिनका कार्य वह ज्योति संसार को देना है जो उन्होंने उससे प्राप्त की है। उस समय अस्तित्व में समस्त पवित्र शास्त्र पुराना नियम ही था; परन्तु वह केवल प्राचीनों के लिए नहीं लिखा गया था; वह सब युगों और सब लोगों के लिए था। यीशु चाहते थे कि उसकी शिक्षा के शिक्षक पुराना नियम लगन से खोजें, ताकि वे वह ज्योति पाएँ जो भविष्यवाणियों में पूर्वकथित मसीह के रूप में उसकी पहचान को स्थापित करती है और संसार के सामने उसकी सेवकाई के स्वरूप को प्रकट करती है। पुराना और नया नियम अविभाज्य हैं, क्योंकि दोनों मसीह की ही शिक्षाएँ हैं। जो केवल पुराना नियम स्वीकार करते हैं, यहूदियों का सिद्धांत उद्धार तक नहीं पहुँचाता, क्योंकि वे उस उद्धारकर्ता को अस्वीकार करते हैं जिसका जीवन और सेवकाई व्यवस्था और भविष्यवाणियों की पूर्ति थी। और जो लोग पुराने नियम को त्याग देते हैं, उनका सिद्धांत भी उद्धार तक नहीं पहुँचाता, क्योंकि वह उस बात को अस्वीकार करता है जो मसीह की प्रत्यक्ष गवाही है। संदेहवादी आरंभ में पुराने नियम का महत्त्व घटाने से शुरू करते हैं, और बस एक कदम और उठाकर वे नए नियम की प्रामाणिकता का भी इंकार कर देते हैं, और इस प्रकार दोनों को अस्वीकार कर दिया जाता है।

आज्ञाओं के महत्व, जिसमें सब्त का बाध्यकारी विधान भी सम्मिलित है, को दिखाने में यहूदियों का ईसाई जगत पर बहुत कम प्रभाव है, क्योंकि सत्य के पुराने खजाने प्रस्तुत करते समय वे स्वयं यीशु की शिक्षाओं में निहित नए खजानों को एक तरफ रख देते हैं। दूसरी ओर, ईसाइयों के यहूदियों को मसीह की शिक्षाओं को दिव्य ज्ञान की भाषा के रूप में स्वीकार करने के लिए प्रभावित करने में असफल रहने का सबसे सशक्त कारण यह है कि उसके वचन के खजाने प्रस्तुत करते समय वे पुराने नियम की संपदा का तिरस्कार करते हैं, जो परमेश्वर के पुत्र की मूसा के द्वारा दी गई प्रारंभिक शिक्षाएँ हैं। वे सीनै से घोषित की गई व्यवस्था को, और एदन की वाटिका में स्थापित चौथी आज्ञा के विश्राम-दिवस को अस्वीकार करते हैं। परन्तु सुसमाचार का वह सेवक जो मसीह की शिक्षाओं का अनुसरण करता है, पुराने और नए दोनों नियम का गहन ज्ञान प्राप्त करेगा, ताकि वह उन्हें उनके सच्चे प्रकाश में लोगों के सामने एक अविभाज्य संपूर्ण के रूप में प्रस्तुत कर सके, जो एक-दूसरे पर निर्भर हैं और एक-दूसरे को प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार, जैसे यीशु ने अपने चेलों को सिखाया, वे अपने भंडार से 'नई और पुरानी वस्तुएँ' निकालेंगे। Spirit of Prophecy, खंड 2, 255.

पिछली सलाह का लाओदीकिया के एडवेंटिस्टों के लिए एक और अनुप्रयोग है। बाइबल को उसके पूर्ण रूप में—पुराना और नया नियम दोनों—मानने का दावा करना, और फिर भी 'भविष्यवाणी की आत्मा' को अस्वीकार करना, केवल एक ही गवाही को स्वीकार करने वाली उसी खाई में गिरना है। सत्य स्थापित करने के लिए दो गवाह आवश्यक हैं, इसलिए एक गवाह से सत्य स्थापित करना असंभव है; और यदि कोई ऐसा करने का प्रयास करता है, तो वह दोनों गवाहों को ही अस्वीकार कर रहा होता है—वह अपना विश्वास उन बातों पर आधारित कर रहा होता है जिन्हें 'आधे-सत्य' कहा जाता है।

अब मैं एक प्रश्न दोहराऊँगा जो जुलाई 2023 से प्रकाशित हो रहे शुरुआती लेखों में से एक में था। प्रश्न है, "1863 के बाद से एडवेंटिज़्म से कौन-सा नया प्रकाश निकला है?" उत्तर सरल है, "कुछ भी नहीं।"

"दानियेल और प्रकाशितवाक्य की पुस्तकें एक हैं। एक भविष्यवाणी है, दूसरी प्रकाशना; एक मुहरबंद पुस्तक, दूसरी खुली हुई पुस्तक। यूहन्ना ने वे रहस्य सुने जिन्हें गर्जनाओं ने उच्चारें, परन्तु उसे उन्हें लिखने की आज्ञा नहीं दी गई।" सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 971.

अतः 'अल्फा और ओमेगा' से यह स्पष्ट होता है कि दानियेल पहला और प्रकाशितवाक्य अंतिम है। दानियेल आरंभ का प्रतिनिधित्व करता है और प्रकाशितवाक्य एडवेंटवाद के अंत का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रकाशितवाक्य एक मुहरबंद पुस्तक है, पर यह एक खुली पुस्तक भी है। यह इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में घटित होने वाली अद्भुत घटनाओं को दर्ज करती है। इस पुस्तक की शिक्षाएँ स्पष्ट हैं, रहस्यवादी और असमझनीय नहीं। इसमें वही भविष्यवाणी की धारा उठाई गई है जैसी दानियेल में है। कुछ भविष्यवाणियाँ परमेश्वर ने दोहराई हैं, इस प्रकार दिखाते हुए कि उन्हें महत्त्व दिया जाना चाहिए। प्रभु ऐसी बातें नहीं दोहराते जो किसी बड़े महत्त्व की नहीं हैं। मैनुस्क्रिप्ट रिलीज़, खंड 9, 8.

एडवेंटिज़्म की शुरुआत में, उन्हीं पदों में जो एडवेंटिज़्म का केंद्रीय स्तंभ हैं, जिनकी मुहर 1798 में खोली गई थी; यीशु ने स्वयं को "पाल्मोनी", "अद्भुत गिनने वाला" के रूप में प्रकट किया। एडवेंटिज़्म के अंत में, यीशु स्वयं को "अल्फा और ओमेगा", अद्भुत भाषाविद् - परमेश्वर का वचन, के रूप में प्रकट करते हैं। इसी कारण, एडवेंटिज़्म की शुरुआत और पहले स्वर्गदूत का संदेश "समय पर टिके हुए" थे। एडवेंटिज़्म के अंत में, तीसरे स्वर्गदूत का संदेश उसके वचन पर टिका होगा।

एडवेंटवाद की शुरुआत और समाप्ति बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के इतिहास के दौरान घटित होती हैं, इसलिए वे संयुक्त राज्य अमेरिका की शुरुआत और समाप्ति के दौरान घटित होती हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका का भविष्यवाणी का इतिहास गणतंत्रवाद और प्रोटेस्टेंटवाद के दो सींगों का इतिहास है। उस इतिहास के निष्कर्ष पर वे दोनों सींग मेम्ने से बदलकर अजगर के समान हो जाएंगे। गणतंत्रवाद लोकतंत्र में बदल जाएगा और प्रोटेस्टेंटवाद अपधर्मी प्रोटेस्टेंटवाद में। जब संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए परीक्षणकाल का प्याला अपने अंत के निकट आने लगता है, जैसा कि अभी हो रहा है, तब अपधर्मी गणतंत्रवाद और अपधर्मी प्रोटेस्टेंटवाद के वे दो सींग पशु की प्रतिमा बनाएंगे, इस प्रकार कलीसिया और राज्य को मिलाकर एक ऐसा सींग बना देंगे जो अजगर की तरह बोलता है। परंतु परमेश्वर बिना साक्षी के न रहेगा, क्योंकि संयुक्त राज्य का निष्कर्ष लाने की प्रक्रिया में वह प्रोटेस्टेंटवाद के वास्तविक सींग को उठाएगा ताकि संयुक्त राज्य में पशु की प्रतिमा के विरुद्ध, और उसके बाद पूरे विश्व का सामना करने वाली पशु की प्रतिमा के विरुद्ध, विरोध किया जा सके। संयुक्त राज्य के अंत में प्रोटेस्टेंट सींग का उठाया जाना उसी ऐतिहासिक ढांचे के भीतर संपन्न किया जाएगा, जिस प्रकार संयुक्त राज्य की शुरुआत में प्रोटेस्टेंट सींग उठाया गया था। एक पूर्व वाचा-जनता को छोड़ दिया जाएगा, और एक नई प्रजा नई वाचा-जनता बनेगी। सूर्य के नीचे कुछ भी नया नहीं है।

जब हम मिलेराइट इतिहास में समझी और प्रस्तुत की गई समय-संबंधी भविष्यवाणियों का उपयोग अल्फा और ओमेगा का मूल्यांकन करने के लिए करते हैं, तो हम पाते हैं कि वे एक ही हैं। हर समय-संबंधी भविष्यवाणी की शुरुआत उस इतिहास से होती है जिसमें वह भविष्यवाणी घोषित की जाती है, और वह इतिहास हमेशा उस इतिहास का प्रतिरूप होता है जिसमें वह भविष्यवाणी पूरी होती है।

तेईस सौ वर्ष की भविष्यवाणी का इतिहास 457 ईसा पूर्व के तीसरे फरमान से आरंभ हुआ और 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के साथ समाप्त हुआ। तीसरे फरमान के आगमन से पहले तक, मंदिर और यरूशलेम के निर्माण का कार्य पूरा हो चुका था। उसी प्रकार, तीसरे स्वर्गदूत के आगमन तक की अवधि में, मिलेराइट मंदिर की आधारभूत सच्चाइयाँ स्थापित की गईं।

1798 में, वह 2520-वर्षीय भविष्यवाणी पूरी हुई जो 723 ईसा पूर्व उत्तरी दस गोत्रों के तितर-बितर होने के साथ शुरू हुई थी। उस भविष्यवाणी ने 1260-1260 वर्षों की दो अवधियाँ चिन्हित कीं: पहली में वास्तविक मूर्तिपूजक रोम द्वारा वास्तविक मंदिर और वास्तविक यरूशलेम को रौंदा जाना, और उसके बाद 1260 वर्षों तक पापाई रोम द्वारा आध्यात्मिक नगर और मंदिर को रौंदा जाना। यह भविष्यवाणी उत्तरी राज्य के विनाश और उसके प्रजाजनों के तितर-बितर होने से आरंभ हुई। भविष्यवाणी के मध्य-बिंदु 538 ईस्वी में मूर्तिपूजक रोम—जो बाइबिलीय भविष्यवाणी का चौथा राज्य है—द्वारा परमेश्वर के लोगों को रौंदने का समापन होता है, और इसके परिणामस्वरूप परमेश्वर की कलीसिया अंधकार युग के जंगल में तितर-बितर हो जाती है। 1798 में उस समय-भविष्यवाणी का अंत, बाइबिलीय भविष्यवाणी के पाँचवें राज्य का अंत दर्शाता है। उत्तरी दस गोत्रों का तितर-बितर होना, और जंगल में भाग गई मसीही कलीसिया का तितर-बितर होना, उन लोगों के एकत्रीकरण का प्रतिनिधित्व करता है जो आगे चलकर प्रोटेस्टेंटवाद का सींग बनने के लिए नियत थे। मार्गचिह्न प्रायः विपरीतताओं द्वारा प्रस्तुत किए जाते हैं, और तितर-बितर होना भी एकत्रीकरण का प्रतिनिधित्व कर सकता है, ठीक जैसे एलिय्याह यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले का प्रतिनिधित्व करता है। उसी भविष्यवाणीगत टकराव में एलिय्याह नहीं मरता, परंतु यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला मर जाता है।

677 ईसा-पूर्व में यहूदा का दक्षिणी गोत्र (जिसकी पहचान शास्त्रों में महिमामय देश के रूप में भी की गई है) पच्चीस सौ बीस वर्षों तक तितर-बितर कर दिया गया, जो 22 अक्टूबर, 1844 को समाप्त हुआ। वह भविष्यवाणी परमेश्वर की प्रजा के रौंदे जाने की ओर संकेत कर रही थी, जिन्हें दानिय्येल 8:13, 14 में "सेना" कहा गया है।

तब मैंने एक पवित्रजन को बोलते सुना, और दूसरे पवित्रजन ने उस बोलने वाले पवित्रजन से कहा, 'नित्य बलि के विषय में और उजाड़ करनेवाले अपराध के विषय में यह दर्शन कब तक रहेगा—कि पवित्रस्थान और सेना, दोनों को पाँव तले रौंदे जाने के लिए दे दिया जाए?' और उसने मुझसे कहा, 'दो हज़ार तीन सौ दिन तक; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।' दानिय्येल 8:13, 14.

तेईस सौ वर्षों की भविष्यवाणी, जो 677 ईसा पूर्व में आरंभ हुई पच्चीस सौ बीस वर्षों की भविष्यवाणी के साथ ही उसी समय समाप्त हुई, दानिय्येल 8:13, 14 में उल्लिखित पवित्रस्थान के रौंदे जाने को इंगित कर रही थी। 677 ईसा पूर्व में यहूदा के तितर-बितर होने की भविष्यवाणी से पहले नबूकदनेस्सर के तीन आक्रमण हुए थे, और वह भविष्यवाणी 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे संदेश के आगमन पर समाप्त हुई।

दो 2520-वर्षीय भविष्यवाणियाँ, जो क्रमशः 1798 और 1844 में समाप्त होती हैं, मिलराइट मंदिर की नींव रखने के छियालीस वर्षों की पहचान करती हैं। मूसा ने मंदिर बनाने के निर्देश प्राप्त करने में छियालीस दिन बिताए, मसीह के समय हेरोद द्वारा मंदिर के पुनर्निर्माण में छियालीस वर्ष लगे, जो मसीह के बपतिस्मा के वर्ष में समाप्त हुआ। बपतिस्मा के बाद वह चालीस दिनों के लिए मरुभूमि में गया, और जब वह लौटा, तो उसने पहली बार मंदिर को शुद्ध किया, और तर्क-वितर्क करने वाले यहूदी जानना चाहते थे कि उसने ऐसा किस अधिकार से किया।

और यहूदियों का फसह का पर्व निकट था, और यीशु यरूशलेम गया। और उसने मंदिर में बैल और भेड़ें और कबूतर बेचने वालों को, और सिक्का बदलने वालों को बैठे हुए पाया; और छोटी-छोटी रस्सियों से एक कोड़ा बनाकर, उसने उन्हें सबको, भेड़ों और बैलों सहित, मंदिर से बाहर निकाल दिया; और सिक्का बदलने वालों का धन बिखेर दिया, और मेज़ें उलट दीं; और कबूतर बेचने वालों से कहा, इन वस्तुओं को यहाँ से ले जाओ; मेरे पिता के घर को व्यापार का घर न बनाओ। तब उसके चेलों को स्मरण आया कि लिखा है, 'तेरे घर के लिये जोश ने मुझे खा लिया है।' तब यहूदियों ने उत्तर देकर उससे कहा, जब तू ये काम करता है, तो हमें कौन-सा चिन्ह दिखाता है? यीशु ने उत्तर दिया, इस मंदिर को ढा दो, और मैं तीन दिन में इसे फिर खड़ा कर दूँगा। यहूदियों ने कहा, इस मंदिर को बनते छियालीस वर्ष लगे हैं, और क्या तू इसे तीन दिन में खड़ा करेगा? परन्तु वह अपने शरीर के मंदिर के विषय में कह रहा था। इसलिए जब वह मरे हुआँ में से जी उठा, तब उसके चेलों को स्मरण आया कि उसने उनसे यह कहा था; और उन्होंने पवित्र शास्त्र और यीशु के कहे हुए वचन पर विश्वास किया। यूहन्ना 2:13-22.

मिलरवादी मंदिर 1798 से, पहली 2520-वर्षीय भविष्यवाणी के समापन पर, छियालिस वर्षों में निर्मित हुआ, और छियालिस वर्ष बाद, 1844 में, दूसरी 2520-वर्षीय भविष्यवाणी की पूर्ति पर समाप्त हुआ। वे छियालिस वर्ष प्रथम स्वर्गदूत के आगमन से आरंभ हुए और तृतीय स्वर्गदूत के आगमन पर समाप्त हुए, क्योंकि मसीह ने कहा था कि उसका मंदिर तीन दिनों में उठाया जाएगा। यदि आप इन तथ्यों को देखने के लिए तैयार नहीं हैं, तो इसका कारण दो मुख्य समस्याएँ हैं, उन समस्याओं से आगे जो एक अनिच्छुक और अपरिवर्तित हृदय में हो सकती हैं। पहली समस्या यह है कि आप भविष्यसूचक वचन को इस दृष्टिकोण से ग्रहण करने को तैयार नहीं हैं कि इतिहास स्वयं को दोहराता है। आप ऐतिहासिकतावादी नहीं हैं। दूसरी समस्या यह अक्षमता है कि आप उन प्रतीकात्मक शब्दों को लागू नहीं कर पाते जो परमेश्वर के वचन में, परमेश्वर के वचन द्वारा लिखे गए हैं। इन सभी भविष्यवाणियों के आरंभ अंत की पहचान कराते हैं, और वे हमेशा केवल दोहराए जाने वाले इतिहास से कहीं अधिक को इंगित करते हैं।

बाइबल कहती है कि हम पवित्र आत्मा के मंदिर हैं और शरीर का यह मंदिर छियालिस गुणसूत्रों से बना है। उन छियालिस गुणसूत्रों का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक हमें बताते हैं कि तेईस पुरुष गुणसूत्र और तेईस महिला गुणसूत्र एक ऐसे प्रोटीन के चारों ओर लिपटे होते हैं जो क्रॉस के आकार का होता है।

दानियेल बारह में तीन परस्पर संबंधित समय-भविष्यवाणियाँ हैं; पहली पवित्र प्रजा की शक्ति के तितर-बितर होने की ओर संकेत करती है, जो लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात काल" का प्रतिनिधित्व करती है। पवित्र प्रजा की शक्ति का तितर-बितर होना, जो उन पर पूरा हुआ, पच्चीस सौ बीस वर्षों का था; परन्तु दानियेल बारह में उस अवधि के केवल अंतिम आधे भाग का ही उल्लेख है। यह दानियेल को ऐसा दिखाता है कि वह उस घोषणा का अर्थ नहीं समझ पाया।

और मैंने उस सन के वस्त्र पहने हुए पुरुष को सुना, जो नदी के जल के ऊपर था, जब उसने अपना दाहिना हाथ और बायाँ हाथ स्वर्ग की ओर उठाया और उस की शपथ खाई जो सदा-सर्वदा जीवित रहने वाला है, कि यह एक काल, दो काल और आधा काल तक होगा; और जब वह पवित्र लोगों की शक्ति को तितर-बितर कर चुका होगा, तब ये सब बातें पूरी हो जाएँगी। और मैंने सुना, पर मैं समझ न सका; तब मैंने कहा, हे मेरे प्रभु, इन बातों का अंत क्या होगा? दानियेल 12:7, 8.

दानियेल अध्याय 12 उस संदेश को चित्रित करता है जो अन्तकाल में, अर्थात् 1798 में, खोला गया था। उस खंड में दानियेल विलियम मिलर का प्रतिनिधित्व करता है, जो उस इतिहास में बुद्धिमानों का प्रमुख प्रतीक है। मिलर को सबसे पहले लैव्यव्यवस्था 26 की 2520-वर्ष की भविष्यवाणी की ओर ले जाया गया, और पद 7 और 8 में वह उन बुद्धिमानों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें इस सत्य के साथ मेल बिठाना है कि 2520 वर्षों का तितर-बितर होना निश्चय ही परमेश्वर द्वारा अपनी प्रजा के तितर-बितर किए जाने के रूप में पहचाना गया है।

और यदि तुम इन सब के बावजूद मेरी बात नहीं सुनोगे, तो मैं तुम्हें तुम्हारे पापों के कारण सात गुना अधिक दण्ड दूँगा। और मैं तुम्हारे सामर्थ्य के घमण्ड को तोड़ दूँगा; और मैं तुम्हारे आकाश को लोहे जैसा और तुम्हारी भूमि को पीतल जैसी कर दूँगा। लैव्यव्यवस्था 26:18, 19.

प्राचीन इस्राएल का "घमंड" तब था जब उन्हें परमेश्वर को अपने राजा के रूप में अस्वीकार करने और एक मनुष्य को राजा चुनने की अनुमति दी गई। उनका घमंड, जो पतन को रोकता है (नीतिवचन 16:18), यह इच्छा थी कि वे अपने आसपास के सभी मूर्तिपूजक राज्यों के समान बनें। पहले उत्तरी राज्य और फिर दक्षिणी राज्य को हटाया जाना, क्रमशः 723 ईसा पूर्व और 677 ईसा पूर्व में शक्ति (राजा) का बिखर जाना था।

मिलर उन बुद्धिमानों का प्रतिनिधित्व करते थे जिन्होंने दानियेल 12 के पूर्ववर्ती पदों में मुहर खोले जाने पर प्रकट हुई ज्ञान की वृद्धि को समझा था, और पद 7 और 8 में उन्हें इस रूप में प्रस्तुत किया गया है कि वे परमेश्वर की प्रजा के तितर-बितर होने के पच्चीस सौ बीस वर्षों का बारह सौ साठ वर्षों से संबंध नहीं समझते थे। दानियेल ऐडवेंटिज़्म के अंत में, और मिलर ऐडवेंटिज़्म के आरंभ में, दोनों ही परमेश्वर की प्रजा का प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐडवेंटिज़्म के अंत में

वही दुविधा विद्यमान है, क्योंकि जब ऐडवेंटिज़्म ने "सात समय" के विषय में मिलर की समझ को एक ओर रख दिया, तो वे बारह सौ साठ वर्षों को केवल अंधकार युग के रूप में ही पहचानने के लिए विवश हो गए। अंत में बुद्धिमानों के सामने भी वैसी ही समस्या थी जिसका समाधान करना था, जैसा कि दानिय्येल और मिलर दर्शाते हैं। सात समय के स्थान पर तीन और आधा समय को दर्शाने के लिए लैव्यव्यवस्था 26 की शब्दावली का उपयोग क्यों किया गया है?

मिलर इस दुविधा को कभी पूरी तरह सुलझा नहीं सके, लेकिन 1856 में अंतिम "नया भविष्यसूचक प्रकाश" छह लेखों की एक श्रृंखला में प्रस्तुत किया गया, जो कभी पूर्ण नहीं हुई, जिसमें "सात समय" को इस रूप में पहचाना गया कि वे मूर्तिपूजक रोम द्वारा परमेश्वर के शाब्दिक इस्राएल को साढ़े तीन वर्षों तक पैरों तले रौंदे जाने का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उसके बाद पापसी रोम द्वारा आध्यात्मिक इस्राएल को साढ़े तीन वर्षों तक रौंदे जाने का। सात वर्ष बाद, एडवेंटिज़्म ने "सात समय" के समस्त प्रकाश को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया, जिससे 1989 में अंत के समय पर बुद्धिमानों के लिए यह दुविधा तैयार हो गई, जब, जैसा कि दानिय्येल अध्याय ग्यारह, पद चालीस में वर्णित है, पूर्व सोवियत संघ का प्रतिनिधित्व करने वाले देशों को पापसी और संयुक्त राज्य द्वारा बहा दिया गया।

मिलर को दिया गया पहला प्रकाश 1863 में अस्वीकार कर दिया गया, और इस विषय पर अंतिम प्रकाश हिराम एडसन द्वारा उन छह लेखों में दिया गया। उन लेखों का प्रकाशन बंद कर दिया गया, और सात वर्ष (समय) बाद आधुनिक इस्राएल की शक्ति को दरकिनार कर दिया गया ताकि उन मूर्तिपूजक कलीसियाओं का अनुकरण किया जा सके जिन्हें कुछ वर्ष पहले ही बाबुल की पुत्रियाँ के रूप में सही रूप से पहचाना गया था। लैव्यव्यवस्था छब्बीस के "सात समय" एक भविष्यवाणी सिद्धांत के रूप में ठोकर का पत्थर बन गए, और प्राचीन इस्राएल का घमंड—जो इस इच्छा में प्रकट हुआ कि साऊल उन पर राजा होकर राज्य करे—दोहरा दिया गया। यीशु अंत को आरम्भ के साथ दर्शाते हैं।

दानिएल की पुस्तक 1290 वर्ष की एक भविष्यवाणी तथा 1335 वर्ष की एक भविष्यवाणी की भी पहचान करती है, जो दोनों 508 में "नित्य" को हटाए जाने से शुरू होती हैं। "नित्य" को हटाया जाना 538 में पापाई सत्ता के उदय के प्रति मूर्तिपूजक रोम के प्रतिरोध को हटाए जाने को दर्शाता है। 538 में पापाई सत्ता को पृथ्वी के सिंहासन पर स्थापित किए जाने से पहले तीस वर्षों का एक संक्रमण काल था; इसके बाद शेष 1260 वर्ष 1798 में समाप्त होते हैं। एक राज्य से अगले राज्य में संक्रमण के ये तीस वर्ष पापाई शासन के अंतिम वर्षों की पहचान कराते हैं, जो 1798 में बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य को पृथ्वी के सिंहासन पर स्थापित किए जाने की ओर ले जाते हैं। 1290 वर्ष की भविष्यवाणी की शुरुआत बाइबल की भविष्यवाणी के एक राज्य से अगले राज्य में संक्रमण को दर्शाती है; उसी तरह उस भविष्यवाणी का अंत भी ऐसा ही संक्रमण दर्शाता है।

तेरह सौ पैंतीस वर्ष की भविष्यवाणी, जो 508 में "the daily" को हटाए जाने से शुरू हुई थी, 1843 में समाप्त होती है।

और जिस समय से नित्य होमबलि हटा दी जाएगी, और उजाड़ करने वाली घिनौनी वस्तु स्थापित की जाएगी, तब से एक हज़ार दो सौ नब्बे दिन होंगे। धन्य है वह जो प्रतीक्षा करता है, और एक हज़ार तीन सौ पैंतीस दिन तक पहुँचता है। दानिय्येल 12:11, 12.

तेरह सौ पैंतीस वर्षों की भविष्यवाणी 1843 में समाप्त हुई, और दानिय्येल कहते हैं कि जब वह भविष्यवाणी पूरी होगी, तो जो लोग 'प्रतीक्षा करते रहे' वे धन्य होंगे। सिस्टर व्हाइट इसे इस तरह कहती हैं।

धन्य हैं वे आँखें जिन्होंने 1843 और 1844 में जो कुछ देखा गया, उसे देखा।

"संदेश दिया गया। और संदेश को दोहराने में कोई विलंब नहीं होना चाहिए, क्योंकि समय के चिन्ह पूरे हो रहे हैं; अंतिम कार्य किया जाना चाहिए। अल्प समय में एक महान कार्य किया जाएगा। परमेश्वर की नियुक्ति से शीघ्र ही एक संदेश दिया जाएगा, जो बढ़कर एक प्रबल पुकार बन जाएगा। तब दानिय्येल अपने भाग में खड़ा होगा, अपनी गवाही देने के लिए।" Manuscript Releases, खंड 21, 437.

अतः तेरह सौ पैंतीस-वर्षीय भविष्यवाणी का आरंभ पैगनवाद के धर्म से पोपवाद के धर्म में संक्रमण की पहचान करता है, और इस प्रकार प्रोटेस्टेंटवाद से मिलराइट प्रोटेस्टेंटवाद में संक्रमण की पहचान करता है।

जो एडवेंटिस्ट एडवेंटवाद के मूलभूत सत्यों को अस्वीकार करते हैं, वे मिलरवादियों द्वारा प्रस्तुत सभी समय-संबंधी भविष्यवाणियों को अस्वीकार करते हैं, यहाँ तक कि दानियेल 8:14 के दो हजार तीन सौ वर्षों को भी। वे इस तथ्य का शायद जोरदार खंडन करें, परंतु तार्किक रूप से दिखाया जा सकता है कि यह तथ्य सत्य है; लेकिन अभी मेरी बात अलग है, इसलिए, जब हम इस लेख को निष्कर्ष पर लाने का प्रयास कर रहे हैं, मैं इसे फिलहाल यहीं छोड़ता हूँ।

ईसा पूर्व 677 में यहूदा की "महिमामय भूमि" का बिखराव दानियेल 8:13, 14 में "सेना" को पददलित किए जाने का प्रतिनिधित्व करता है, और आधुनिक "महिमामय भूमि", अर्थात संयुक्त राज्य अमेरिका, की स्थापना की ओर संकेत करता है। उन्हीं पदों में उल्लिखित तेइस सौ वर्षों की अवधि ईसा पूर्व 457 में आरम्भ हुई, और "पवित्रस्थान" को पददलित किए जाने का प्रतिनिधित्व करती है।

तब मैंने एक पवित्रजन को बोलते सुना, और दूसरे पवित्रजन ने उस बोलने वाले पवित्रजन से कहा, 'नित्य बलि के विषय में और उजाड़ करनेवाले अपराध के विषय में यह दर्शन कब तक रहेगा—कि पवित्रस्थान और सेना, दोनों को पाँव तले रौंदे जाने के लिए दे दिया जाए?' और उसने मुझसे कहा, 'दो हजार तीन सौ दिन तक; तब पवित्रस्थान शुद्ध किया जाएगा।' दानियेल 8:13, 14.

677 ईसा पूर्व और 457 ईसा पूर्व ऐसी तिथियाँ हैं जो परमेश्वर की प्रजा और उसके पवित्रस्थान के संबंध से परस्पर जुड़ी हैं। 22 अक्टूबर, 1844 को परमेश्वर ने एक ही समय में सेना और पवित्रस्थान दोनों को फिर से एक साथ कर दिया। 677 ईसा पूर्व और 457 ईसा पूर्व के बीच के दो सौ बीस वर्ष उस काल का प्रतीक हैं जब परमेश्वर एक ऐसा मार्गचिह्न स्थापित करता है जो ज्योति की वृद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। 22 अक्टूबर, 1844 को तीसरे स्वर्गदूत की ज्योति आ पहुँची, पवित्रस्थान की ज्योति चमकने लगी और उस ज्योति का प्रचार करने के लिए एक सेना वहाँ उपस्थित थी।

उस भविष्यवाणी की रेखा में, जो शैतान और मसीह के बीच हुए त्रि-गुना संघर्ष की पहचान करती है, 1611 की किंग जेम्स बाइबल प्रकाशित हुई। ठीक दो सौ बीस वर्ष बाद, 1831 में, विलियम मिलर ने पहली बार अपना संदेश प्रकाशित किया:

"नौ वर्षों तक विलियम मिलर इस बात के प्रति आश्चर्य थे कि उन्हें अपना संदेश कलीसियाओं को देना चाहिए; परंतु वे प्रतीक्षा करते रहे, आशा करते हुए कि कोई मान्यता प्राप्त प्राधिकारी शीघ्र आने वाले उद्धारकर्ता के शुभ समाचार की घोषणा करेगा। इस प्रकार प्रतीक्षा करते हुए, उन्होंने केवल संदेश की सत्यता ही सिद्ध की; उनका नाम तो जीवित होने का था, पर वे तेजी से मर रहे थे। 1831 में मिलर ने भविष्यवाणियों पर अपना पहला प्रवचन दिया।" स्टीवन हैस्केल, द सीअर ऑफ पटमोस, 77.

परमेश्वर ने बाइबल तैयार करने के लिए उपयोग किए गए पवित्र और सही मूल ग्रंथों की रक्षा की। फिर उन्होंने 1611 में अपनी बाइबल प्रस्तुत की। तदुपरांत उन्होंने एक संदेशवाहक को उठाया, जो बाइबल के भीतर स्थित, उससे व्युत्पन्न और उसमें स्थापित नियमों का प्रयोग करके प्रथम स्वर्गदूत का संदेश प्रस्तुत करे। 1831 में, मिलर के संदेश को औपचारिक रूप दिया गया—जैसे मसीह के इतिहास में यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने संदेश को औपचारिक रूप दिया था, और जैसे प्रत्येक सुधारात्मक आंदोलन में संदेश को औपचारिक रूप दिया गया है। मिलर का संदेश—न्याय के उद्घाटन की घोषणा करने वाला प्रथम स्वर्गदूत का संदेश—दो सौ बीस वर्षों की भविष्यसूचक समयावधि के अनुप्रयोग द्वारा सीधे समर्थित है। यह बाइबिल की भविष्यवाणी के छठे राज्य—संयुक्त राज्य अमेरिका—की शुरुआत में चेतावनी का संदेश था।

1996 में फ्यूचर फॉर अमेरिका नामक सेवकाई शुरू हुई, और तीसरे स्वर्गदूत का वह संदेश, जो 1989 में उद्घाटित किया गया था—जो पापसी के घातक घाव के भर जाने और शीघ्र आने वाले रविवार के क्रानून की पहचान कराता

था—The Time of the End शीर्षक वाली एक पत्रिका में प्रकाशित किया गया। एडवेंटवाद के अंत के समय का संदेश उसी तरह औपचारिक किया गया था, जैसे शुरुआत का संदेश औपचारिक किया गया था। शुरुआत में संदेश समय पर आधारित था और परमेश्वर के वचन में निहित सत्यों के आगे के विकास का प्रतिनिधित्व करता था। 1996 में, 1776 में संयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना के दो सौ बीस वर्ष बाद, एडवेंटवाद के अंत के समय का संदेश औपचारिक रूप से स्थापित किया गया और उसने तीन स्वर्गदूतों के संदेशों के आगे के विकास का प्रतिनिधित्व किया।

जब हम बाइबल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के इतिहास में गणतांत्रिक सींग और प्रोटेस्टेंट सींग के समानांतर इतिहास पर विचार करते हैं, तो यह समझना आवश्यक है कि प्रोटेस्टेंट सींग से अभिप्राय किससे है और किससे नहीं।

परमेश्वर के सम्मुख अपने को स्वीकृत ठहराने के लिए प्रयत्न कर; ऐसा काम करने वाला बन जिसे लज्जित होना न पड़े, जो सत्य के वचन को ठीक रीति से समझाता हो। परन्तु अपवित्र और व्यर्थ की बातों से बच, क्योंकि वे और भी अधिक अधर्म में बढ़ाएँगी। 2 तीमुथियुस 2:15, 16.